संशोधित सार प्रतिलिपि

अजमेर नगर का स्थानिक पर्यावरणीय अवनयन –एक भौगोलिक मूल्यांकन

म.द.स.वि.वि. अजमेर

को

डॉ. ऑफ फिलोसॉफी

की डिग्री (भूगोल) के लिये

प्रस्तुत

निर्देशक (पर्यवेक्षक)
डॉ. अजय कुमार शर्मा
सम्राट पृथ्वीराज चौहान रा.महा. वि. अजमेर

प्रस्तुतकर्ता (शोधार्थी)
प्रीती आदिवाल

Scanned by CamScanner

संशोधित शोध प्रारूप – क्र. एफ. – 15/2011/Geog/शोध/15403/Date - 02-05-15

APPENDIX - IV-A

Format for Outline (Synopsis) of Proposed Research work

(to be supplied in Four copies)

(Reference Ord. 124,11)

1. Nameof Scholar (In English) Preeti Adiwal

   (In Hindi) प्रीति आदिवाल

2. Title of the Research Work :

   (In English) Spatial Environmental Degradation In Ajmer City - A Geographical Appraisal

   (In Hindi) अजमेर नगर का स्थानिक पर्यावरणीय अवनयन – एक भौगोलिक मूल्यांकन

3. Location
   a. Institution/Department where the work is to be done
   b. Geographical area of Investigation, if any.

4. Introduction Importance of Proposed Investigation, Objective.
5. Review (Work already done on the subject of proposed Research Study)
6. Research Gaps identified in the proposed field of investigation. (Based onthe review)
7. Major Hypothesis, if any
8. Research methodology.
9. List of references cited.

Preeti Adiwal

Signature of the Candidate with date

Outline Approved

Name and Signature of supervisor with date & seal. 14-5-15

Dr. Ajay Kumar Sharma

Lecturer in Geography
Govt.College, Ajmer

Scanned by CamScanner

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

Certificate By Supervisor

Certified that :

1. I am willing to guide the research work of Shri/Km./Smt. ....Preeti Adiwal............ on the above subject if he/she is registered for Ph.D.
2. To the best of my knowledge, the subject selected has not been studied and is not being studied so far in any University.
3. The subject is of sufficient scope to keep the candidate engaged for two years.
4. The subject will lead to a valuable contribution. I have seen and approved the outline of proposed research work submitted by the candidate.
5. I have ....05.................. (give numbers) Research candidates registered under my supervision and the serial number of this candidate whose application is being forwarded for registration is Revised Copy/serial-F-15/2011/Geog/शोध/15403/Dated-2-5-15 (give the serial number)
6. The candidate is not in a close relation (the term of close relation is defined in the examination ordinance of the University)

4-5-15

Lecturer in Geography
Govt. College Ajmer

Signature of the Supervisor with date

Certified that the available facilities will be extended to Shri/Km./Smt. ....Preeti Adiwal.... for research work if he/she is registered for Ph.D.

Signature of the Principal/ Director of the Institution with date

प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

4-5-15

Signature of the Head, Department with date

Head,
Department of Geography
Government College, Ajmer

Scanned by CamScanner

अजमेर नगर का स्थानिक पर्यावरणीय अवनयन – एक भौगोगिक मूल्यांकन

अजमेर: एक परिचय –

अजमेर प्राचीनकाल से ही राजस्थान की ऐतिहासिक राजनीतिक, प्रशासनिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक महत्त्व की पृष्ठभूमि रहा है, जो की इसके इतिहास से साफ स्पष्ट हो जाता हैं। यह राज्य के लगभग मध्य में स्थित होनेके कारण 'राज्य का हृदय–स्थल' भी कहलाता है और इसी स्थिति के कारण इस पर कई शासकों के शासर की महत्वकांक्षा ने इसे अतिहास व राजनीतिक क्षेत्र में विशिष्ट पहचान दिलाई है। अजमेर नगर की स्थापना चौहान शासक 'अजयपाल चौहान' द्वारा 700 वर्ष पूर्व की गई थी। इन्हीं के नाम पर इस नगर का अजयमेरू रखा गया जो कि कालांतर में य विकृत होकर 'अजमेर' हो गया है।

अजमेर का परिवर्तित स्वरूप : नगर की स्थापना के समय से ही नगर का विकास संकरी गलियों व सड़ों के साथ मुख्य वाजार 'नला वाजार' से प्रारम्भ हुआ, जो कि आज नगर का केन्द है और अतयधिक जनसंख्या दवाव अनियंत्रित विकास और अनाधिकृत निर्माण के कारण अतयधिक संकुचित एवं कई सामाजिक समस्याओं का केन्द्र वन गया है।

इसके अतिरिक्त विकास व विस्तार की प्रतिस्पर्धा में नगर अपना प्राकृतिक पर्यावरणीय सौन्दर्य खोता जा रहा है। कई पर्यावरणीय व सामाजिक समस्याओं से घिरता जा रहा है। इन्हीं पर्यावरणीय एवं सामाजिक समस्याओं का अध्ययन इस शोध कार्य में किया जायेगा।

यह नगरी ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती की दरगाह, पुष्कर – राज एवं ब्रह्म – मन्दिर की उपस्थिति के कारण राजस्थान में ही नहीं विश्व में विशेष धार्मिक महत्व रखती है। जिसके दर्शनार्थ लाखों देशी–विदेशी, हिन्दू–मुस्लिम दर्शनार्थी प्रतिवर्ष अजमेर आते हैं जिससे इस नगर का पर्यटन नगरी के रूप में भी विकास हुआ है।

भौगोलिक स्थिति –

अजमेर जिला त्रिकोणाकार रूप में राजस्थान के लगभग मध्य में स्थित है। अक्षांशीय एवं देशान्तरीय विस्तार $25^{0}38'$ उ. – $26^{0}50'$ उ. अंक्षाश तथा $73^{0}54'$ पू. – $75^{0}22'$ पू. देशान्तर है। अजमेर नगर अरावली श्रृंखला की चोटी तारागढ़ के पूर्वी पर्वत पदीय क्षेत्रों पर बसा है। यह पूर्व में राज्य की राजधानी जयपुर, दक्षिण में भीलवाड़ा, पश्चिम में पाली एवं उत्तर व उत्तर – पश्चिम में नागौर जिलों से घिरा है। अजमेर नगर राज्य के वृहद नगरों में पाँचवाँ स्थान रखता है। अजमेर नगर के पश्चिम में स्थित जिले मारवाड़, उत्तर–पूर्व में स्थित जिले ढूढांड, दक्षिण–पूर्व के जिले हाड़ोती व दक्षिण – पश्चिम के जिले मेवाड़ क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मिलित किये जाते हैं।

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित कार्य का शोध समस्या कथन

प्रस्तुत शोध अध्ययन राजस्थान के अजमेर नगर के पर्यावरणीय अवनयन के भौतिक - सामाजिक कारणों विश्लेषण से संबंधित है। अजमेर नगर के लिये सर्वाधिक चिन्ताजनक विषय यह है कि नगर के उपलब्ध सीमित क्षेत्रफल के उपरान्त भी नगर का विकास तथा भूमि का प्रयोग पर्यावरण के मूल्यों पर अव्यवस्थित तथा अनियोजित प्रकार से किया जा रहा है। जिसके फलस्वरूप बाह्य स्तर पर (आर्थिक रूप) तो नगर का विकास दृष्टिगत होता है, परन्तु नगरीय पर्यावरण की गुणवत्ता का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है जो किसी भी प्रकार से नगर के जीवंत विकास (Sustainable Development) को परिलक्षित नही करता है।

नगरो में सतत् बढ़ते प्रदूषण के फलस्वरूप कई प्रकार की समस्याओं का अविर्भाव हुआ है जो कि सभी ओर समान नही हैं अतः अध्ययन की सुविधानुसार नगर को खण्डानुसार विभाजित किया गया है जिसके तीन विभाजन किए गए है :-

1. CBD क्षेत्र (Central Business District)
2. आवासीय क्षेत्र (Residential Area)
3. अमलैण्ड (Umland)

अजमेर नगर में उत्पन्न पर्यावरणी समस्याँए निम्नलिखित है -

- पर्यावरणीय अवनयन - अरावली पर्वत श्रंखला का अवैधानिक एवं अनियोजित खनन, वनों का अंधाधुन्ध कटाई, मरूस्थलीकरण आदि।
- नगर का सीमित क्षेत्रफल तथा सतत् बढती मानव संख्या।
- नगरीय संसाधनों पर बढ़ती जनसंख्या के अनावश्यक दबाव।
- नगर में बढ़ती आबादी से गन्दी बस्तियों का विस्तार एवं इससे उत्पन्न समस्यायें।
- नगर में विभिन्न प्रदूषणों तथा गन्दगी का प्रसार एवं उसके फलस्वरूप अनेक बीमारियों का जन्म।
- ठोस अपशिष्टों के निस्तारण एवं प्रबन्धन की समस्या।
- नगर में बढ़ता यातायात दबाव एवं दुर्घटनायें - सड़क यातायात की दुर्दशा।
- नगरवासियों के शाश्वत जीवन मूल्यों में गिरावट के परिणामस्वरूप अपराधीकरण की प्रवृत्ति में प्रसार।
- नगर में वढ़ती अन्य समस्याएं - चोरी, साम्प्रदायिक दंगे, शैक्षणिक पिछड़ापन आदि।

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित शोध कार्य की उपयोगिता एवं महत्त्व –

उक्त विषय की गहनता एवं विशदता की जानकारीइसी से हो जाता है कि पर्यावरणीय समस्या अजमेर नगर की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व की समस्या है। जिसका प्रभाव नगरों तक ही सीमित न रहकर दूरांत क्षेत्रों पर भी स्पष्टतः देखा जा सकता है।

विषय की उपयोगिता एवं महत्त्व निम्नानुसार है –

- यह अध्ययन अजमेर नगर के कुछ महत्त्वपूर्ण पर्यावरणीय मुद्दों एवं समस्याओं पर प्रकाश डालता है साथ ही इन्हें पहचानने, अव्यवस्था के कारणों को जानने का भी प्रयत्न करता है जो कि मानवीय आर्थिक क्रियाकलापों द्वारा उत्पन्न हुए है।
- नगर एवं नगरीय पर्यावरण एक दूसरे से अंतर्संबंधित है, पुनरपि इसका मानव तथा मानव जीवन पर क्या, कितना और कैसा प्रभाव है यह जानने में सहायक होगा।
- यद्यपि इस विषय पर कई विस्तृत चर्चायें हुई, योजनाएं एवं समितियां बनी सुझाव दिये गये परन्तु आशानुरूप सफलता नहीं मिल पाई है। अतएव इस विषय पर मंथन, शोध अध्ययन एवं विश्लेषण से ज्ञात होगा कि पर्यावरणीय सामंजस्य एवं समायोजन कर नगर का सतत् पोषणीय विकास करने में कहां एवं कितनी चूक हमसे हुई है ? और भविष्य में इसकी कितनी संभावनायें उपस्थित है ?
- उक्त शोध कार्य जहां एक ओर नगर व नगरीय पर्यावरण के प्रति समाज के लिये उपादेय होगा एवं नगर की भविष्य की योजनाओं को सेवित करेगा वहीं दूसरी ओर अन्य नगर भी इससे प्रेरित होकर इसका अनुसरण कर सकेगें।

प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य –

इस विषय का उद्देश्य यह अन्वेषण करना है कि नगर में उत्पन्न मुख्य पर्यावरणीय समस्याओं तथा मानवीय क्रियाकलापों के मध्य संबंध स्पष्ट करना, जो कि कई समस्याओं के लिये उत्तरदायी है यथा –

- अजमेर नगर का बढ़ता क्षेत्रीय विस्तार एवं गिरती पर्यावरणीय गुणवत्ता –प्रदूषण एवं अपशिष्ट पदार्थों (कचरे) में वृद्धि का खण्डानुसार आंकलन करना।
- प्रदूषण एवं ठोस अपशिष्ट पदार्थ का प्रबन्ध एवं निस्तारण
- नगर के सामाजिक पर्यावरण (निवासियों के नैतिक पतन) में गिरावट का अध्ययन करना।
- प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग करते हुए नगर का विकास स्मार्ट सिटी के रूप में करना तथा इसकी विरासत को पर्यावरण व जीवन की गुणवत्ता अनुसार संरक्षित रखना।
- पर्यावरणीय ह्रास के कारणों का अवलोकन करना तथा उचित योजनाओं का क्रियान्वयन करना।

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित शोध कार्य की परिकल्पना

- नगर में बढ़ते ठोस अपशिष्ट का कारण है – अस्पतालों, घरों एवं गन्दी बस्तियों से उत्सर्जित अपशिष्टों का उचित प्रबंध एवं निस्तारण का अभाव
- नगरीय पर्यावरणीय गुणवत्ता के ह्रासोन्मुख होने का प्रमुख कारण है अरावली श्रृंखला का अवैधानिक खनन, वनों की अंधाधुन्ध कटाई, मरूस्थलीकरण का प्रभाव, वाहनों की बढ़ती संख्या, कृषि क्षेत्र का वाणिज्यीकरण विभिन्न प्रदूषणों (जल, भूमि, वायु एवं भूमिगत जल) में वृद्धि आदि।
- नगरवासियों के शाश्वत जीवन मूल्यों में गिरावट के फलस्वरूप समाज में अपराधी प्रवृतियों में वृद्धि।

प्रस्तावित शोध कार्य की प्रणाली एवं विधि–तंत्र

- यह शोध कार्य प्राथमिक आंकड़ों के साथ–साथ द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। प्राथमिक आंकड़ों के अन्तर्गत प्रश्नोत्तरी, डॉक्यूमेन्ट्री स्थानीय लोगों का साक्षात्कार, क्षेत्र भ्रमण, फोटोग्राफी, अवलोकन, वैज्ञानिक विश्लेषण एवं परिक्षण, सैम्पल परिक्षण (टेस्टिंग) एवं मूल्यांकन को सम्मिलित किया गया है।
- द्वितीयक आंकड़ों का संकलन सरकारी, गैर सरकारी एवं अर्द्ध सरकारी स्त्रोतों जैसे – नगर निगम, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, मौसम विभाग, पर्यावरण विभाग आदि से किया गया है। इनके अतिरिक्त विभिन्न प्रकाशनों, रिपोर्टो, जनगणना संबंधी आंकड़े आदि और भी अन्य स्त्रोतों से प्राप्त किये गये हैं।
- इस शोध कार्य में 1991–2001 तथा 2001 के बाद से अब तक के समय में हुए पर्यावरणीय एवं सामाजिक परिवर्तनों को सम्मिलित किया गया है।
- यह शोध व अन्वेषण अजमेर नगर में पर्यावरण गुणवत्ता के ह्रास तथा सामाजिक प्रदूषण के अचित प्रवन्धन न होने के कारणों पर आधारित है। इससे नगर की समस्याओं को समझने का अवसर मिला है और साथ ही शोध में कुछ समाजोपयोगी सुझाव एवं उपाय भी सुझाये गये है जो नगर में लागू किये जो सकते है। तथा अन्य नगरों के लिये भी लाभप्रद सिद्ध हो सकते है।

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित शोध कार्य के अध्याय –

अध्याय – 1

1. प्रस्तावना – परिचय एवं शोध समस्या कथन
   1.1 शोध कार्य का उद्देश्य
   1.2 शोध कार्य की परिकल्पना / अवधारणा
   1.3 शोध विधि – तंत्र
   1.4 शोध कार्य की उपयोगिता एवं महत्त्व
   1.5 साहित्य समीक्षा

अध्याय - 2 अजमेर नगर का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य – विरासत नगर

अध्याय- 3 मानव संसाधन

3.1 जनसंख्या का सामान्य वितरण

3.2 जनसंख्या घनत्व एवं वृद्धि
3.3 साक्षरता एवं लिंगानुपात
3.4 जातीय संगठन एवं सामाजिक स्तर
3.5 व्यवसायिक संरचना

अध्याय 4. अजमेर नगर में पर्यावरणीय अवनयन – कारण एवं प्रकार

4.1 भौतिक प्रदूषण
4.1.1 जल प्रदूषण – वर्तमान स्थिति एवं कारण
4.1.2 भूमि प्रदूषण – वर्तमान स्थिति एवं कारण
4.1.3 अरावली श्रृंखला का गैर कानूनी एवं अनियोजित खनन
4.1.4 मरूस्थलीकरण
4.1.5 वनों की अंधाधुन्ध कटाई
4.1.6 ठोस अपशिष्टों का यथोचित निस्तारण का अभाव (घरेलू, चिकित्सकीय औद्योगिक अपशिष्ट)
4.1.7 वायु प्रादूषण – वर्तमान स्थिति एवं कारण

Scanned by CamScanner

अध्याय 5- सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण में अवनयन –

5.1 निवासियों की अपराधी प्रवृतियों में वृद्धि एवं शिथिल कानूनी व्यवस्था
5.2 शैक्षिक एवं सामाजिक पिछड़ापन
5.3 सडकों पर वाहनों का दवाव
5.4 प्रदूषणों के फलस्वरूप बीमारियों का जन्म
5.5 अजमेर स्मार्ट सीटी के रूप में

अध्याय 6. शोध विश्लेषण एवं व्याख्या –

अध्याय 7. निष्कर्ष एवं सुझाव –

Apendix प्रश्नोत्तरी एवं विषय संबंधी डॉक्यूमेन्ट

संदर्भ सूची / Bibliography

Scanned by CamScanner

प्रस्तावित शोध कार्य की साहित्य समीक्षा –

साहित्य समीक्षा –

- पाण्डे एस. के अनुसार (2005) – नगरीय पर्यावरण के अन्तर्गत नगरीकरण और औद्योगीकरण की प्रक्रिया एक – दूसरे से गहराई से अन्तर्सम्बन्धित है। नगरों की बढ़ती जनसंख्या व जनसंख्या घनत्व, उद्योगों तथा वाहनों से उत्सर्जित सीसा, घरेलू और औद्योगिक अपशिष्ट नागरिकों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं।
- पारिख ने अपने एक अध्ययन में बताया कि (1995) तीव्र औद्योगीकरण ने चेम्बूर के निकट उद्योगों का जमावड़ा लगा दिया है, जिसके परिणामस्वरूप अत्यधिक वायु प्रदूषण हुआ और वह स्थान 'गैस चेम्बर' के रूप में परिवर्तित हो गया है।
- विश्व बैंक (1992) तथा यू.एन.डी.पी. के अनुसार कोई क्षेत्र यथा उपभोग संबंधी तीव्र आर्थिक विकास संबंधी सम्पन्न जीवन स्तर संबंधी क्षेत्र हो बाह्य तौर पर विकास को दर्शाते हैं। अर्थात् आर्थिक वृद्धि को प्रदर्शित करते हैं, किन्तु प्रतिव्यक्ति कार्बनडाई –ऑक्साइड उत्सर्जन, प्रति व्यक्ति उर्जा उपभोग और अन्य पैमाने पिछड़ेपन के साथ विकास को प्रदर्शित करते हैं।
- लैण्डसबर्ग के अनुसार (1970) वायु प्रदूषण नगरों के लिये बड़ा ही महत्त्वूर्ण मुद्दा है। इन्होंने बताया कि वायु में उत्सर्जित अधिकांश प्रदूषक नगरीय क्षेत्रों द्वारा ही किये जाते हैं और यही मौसम परिवर्तन घोषित करने के कारक भी होते हैं। इन्होंने अनुभव किया कि वातावरण में उत्सर्जित प्रदूषक शीघ्र ही दूसरे परिवर्तनों को जन्म देते हैं और यह परिवर्तन तथा इनके प्रभाव एकात्मक नहीं होते। यह जलवायुवीय रूपान्तरण नगरों तक ही सीमित न होकर क्षेत्रीय व वैश्विक परिवर्तन लाते हैं।
- वोल्फ के शब्दों में – ''वायु तथा नगरीय क्षेत्र की गुणवत्ता, जो कि नगर की संरचना से निकटता से संबंधित है, भी नगरीय परिस्थितिकीय आवास कहलाते हैं।'' नगरों में वाहनों की रेलमपेल तथा भूमि पर ठोस अपशिष्ट पदार्थों से वायु में घातक गैसों का उत्सर्जन होता है।
- वर्मा एल.एन. के अनुसार (2008) पर्यावरणीय साधनों का उपयोग तथा दुरूपयोग नगरवासियों के दिन – प्रति – निद के कार्यों तथा जीवन – शैली को प्रत्यक्षतः प्रभावित कर रहाहैं। लगातार बढ़ती नगरीय आवादी पर्यावरण की गुणात्मक क्षमता को क्षीण, अक्षम और प्रदूपित बना रही है जिसके परिणामस्वरूप यह उपभोग योग्य नहीं रहती। हाल ही में नगरों में औद्योगीकरण तथा प्रववस के कारण हुई जनसंख्या वृद्धि ने नगरीय पर्यावरण को इस सीमा तक प्रदूपित कर दिया है कि नगरवासियों की जीवन गुणवत्ता पर ही पूर्ण विराम लग गया है।

Scanned by CamScanner

- रियो +20 सम्मलेन 2012 के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जीवंत विकास के तीन स्तंभों आर्थिक विकास, सामाजिक विकास तथा पर्यावरण सुरक्षा में समेकित कर कार्यक्रमों के प्रभावी निष्पादन पर वल दिया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य गरीवी निवारण, खाद्य सुरक्षा, जल, प्रवन्धन, ऊर्जा उपलब्धता, शहरी व समुद्रों का प्रवन्धन तथा राष्ट्रीय आपदाओं की तैयारी है।
- जलवायु परिवर्तन पर 17वां संयुक्त राष्ट्रीय सम्मेलन (28 नव. – दिस. 2011) – इस सम्मेलन में 1997 में हस्ताक्षरित क्योटो संधि में 'ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन पर रोक लक्ष्य' को कम करने का प्रावधान रखा गया था।
  इसी सम्मेलन के वाद उर्जा उत्पादन में अग्रणी देश कनाडा के जलवायु परिवर्तन से संवंधित क्योटो संधि से हटने की घोषणा दिस. 2011 में की थी।
- केल्विन आर कोक्स (197) ने प्रस्तावित किया कि किसी पर्यावरण के अच्छे, वुरे व संघर्षरत पर्यावरण की श्रेणी में आठ पैमानों के आधार पर रखा जा सकता है कि – एक अच्छा पर्यावरण हो –

nuisance free	ध्वनि मुक्त
health	स्वास्थ्यवर्धक
an employment – opportunity	रोजगार अवसर की उपलब्धता
recreational – opportunity	नवसृजन का अवसर
housing – opportunity	आवासीय सुविधा उपलब्धता
an educational – opportunity	शैक्षिक अवसर की उपलब्धता
a modern amenity	विलासित की वस्तुओं की उपलब्धता
a health – opportunity	स्वास्थ्य सुविधा की उपलब्धता कराने वाला हो।

- इदरिस के अनुसार (2004) – प्रतिवर्ष उत्पन्न होने वाला अपशिष्ट नगरीकरण तथा जनसंख्या वृद्धि के अनुसार वढ़ता ही जा रहाहै और इस अपशिष्ट का उचित प्रवन्धन एवंनिस्तारण आज एक चुनौती वन गया है। जिसके लिये अतिरिक्त भूमि की आवश्यकता है।
- जलवायु परिवर्तन एक बड़ी चुनौती के रूप में विश्व के समक्ष उपस्थित है। इस क्षेत्र में IPCC (International Penal on Climate Change) और UNFCC (United National Framework Convention on Climate Change) पर्यावरण की गतिविधियों के वारे में नवीनतम जानकारियाँ एकत्र करते रहते हैं।

Scanned by CamScanner

संदर्भ सूची

Azia A, 1991 Cities & Environment. In development & Ecology Essays.

CPCB 2006 : Project on Monitoring & Inventory of Emissions of volatble compounds.

CPCB 2004 : National Summary Report

Fener J 1999 : Urban Air Quality Elrevier Journal. Vol 33 Issue 24.

Idris A.B. Inane, M.N. Hasan. 2004 : Overview of waste disposal and land fills / dumps in Asian Countries : Material Cycles and Waste Management.

Landsbery H.E. 1970 : Quoted by A.Aziz. Cities and Environment. In Mehdi Raza's (Ed) Development & Ecology. New Delhi : Rawat Publications.

Rajasthan Pollution Control Board

Reports on Environmental Status of Ajmer Region.

Matia S., P.K. Agarwal 2005 : Environmental degradation in the content of Growing Urbanization : A focus on the Metropolitan cities of India J. Hum Ecol.

Pachauri R.K. 1993 : Climate convention problems and prospects Human development report (UNDP)

Verma L.N. 2008 : Urban Geology : Rawat Publications.

Dr. L.R. Bhalla : Geography of Rajasthan, Kuldeep Publishing House Jaipur (2010)

Scanned by CamScanner

Wolf P. 1974: The future of the City. In new direction in urban planning New York : Waston Yuptill Publication.

World Bank 1992 World development report 1992. Development & the Environment New York Oxford University Press.

World Bank 2005 : For a breath of fresh air : Ten years of progress and challenges in Urban Air Quality Management and Challenges in India, 1993-2002, Environment & Social Development Unit, South Asia Region. The world bank (India Country Office) New Delh, India

International Research Journal of Environment Science.

Sharma K & Mathur P. : Vol 3(2), 99-102 (2014) A sustainable diet for a sustainable life : An Indian city, Ajmer as a Case study.

Bansal S.C. 2011 : Urban Geography

Singh Savindra (2011) Environmental Geography, Park Pustak Bhawan Allahabad.

Majundar R.C. 1994 : Ancient India Motilal, Banarsidas Publication.

Indian Census : Census India.gov.in 2001 (Ajmer)

CPCB 2001 : State of the environment report India, State of the Environment report Rajasthan.

CSE 2001 India : State of Environment 2001: A Report

Maitra A.K. 1993 : Emerging Trends of Urbanization in India

Ministry of Environment & Forest Report

National Solid Waste Authority of India 2003. Environmental Information System News Letter.

Scanned by CamScanner

Quality Management in India, 1993-2002, Environment & Social Development Unit, South Aisa Region.

Sarika K (2004) Analysis of some environmental problem in India.

Sita K. & Bhagat 2011 : Ecological concerns in Urban Agglomeration

Dr. Saxena : Environment Geography

Dr. Upadhyay : Environment Geography

Brown, E.H. (!970) : Man shapes the Earth, Geographical Journal Vol. 136

Daeman, R.F. (1976) : Environmental Conservation, John Wiley. New York.

Dhabriya S.S. (1986) Strategy for environmental planning & Management, Paper presented in seminar, University of Rajasthan, Jaipur, Sept. 20

Dikshit R.D. (1984) : Geography and the Teaching of the Enviornment. Deptt of Geography, Poona University pp 68-83

Furely, P.A. & Nervey, W.W. (1983) : Man and Biophere, Butter worthy ondon.

Kumara, V.K. (1982) Kanpur City : A study in Environmental pollution : Tarabook agency, varanasi.

Mishra V.C. (1967) : Geography of Rajasthan. National Book Trust, New Delhi.

Singh Savindra & Tiwari R.C. (ed.) (1989) : Geographology and Environment, Allahabad.

Scanned by CamScanner

Strahlar, A.N. and Strahler, A.H. (1976) : Geography and Man's Environment, John Wiley New York

Articles

Ashwani Kumar : Actional Plan for Eco restoration of holy city of Ajmer 21st Sept. 2009

Growth of Ajmer city – A historical Prespective.

Growth of Ajmer icty and pollution problems are related to population growth.

Environmental Problems of Holy City of Ajmer (Rajasthan) India needs urgent attention.

Websites of United Nations Environment Programme

Websites of Ministry of Environment & foresty

Websites of Pollution control board of Rajasthan

Websites of census.india.gov.in

Magazines : Partiyogita Darpan

Geography and you

Cronicle

News papers

Scanned by CamScanner